Date – 26/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Buddhism logic : Theory of knowledge.

Scanned with CamScanner

बौद्ध तर्कशास्त्र

बौद्ध तर्कशास्त्र के प्रणेता दिङ्नाग ने अपनी प्रसिद्ध "प्रमाणसमुच्चय" में अनुमान को 'ज्ञात अविनाभाव संबंध द्वारा नांतरीयक अर्थ का ज्ञान' के रूप में परिभाषित किया है। इस परिभाषा में दो महत्वपूर्ण पदों का उल्लेख हुआ है - अविनाभाव संबंध तथा नांतरीयक अर्थ। अविनाभाव (अ = नहीं, विना = नहीं, भाव = सत्ता या अस्तित्व) का तात्पर्य है कि एक सत्ता या अस्तित्व के नहीं होने पर दूसरी सत्ता या अस्तित्व का नहीं होना। अतएव अविनाभाव संबंध दो पदों के बीच का वह संबंध है जिसमें एक की उपस्थिति अनिवार्यतः दूसरे की उपस्थिति का बोध कराता है। मनुष्य का होना मृत्यु के होने का सूचक है। मनुष्य और मृत्यु इन दोनों पदों में अनिवार्य संबंध है। अतः अनिवार्य संबंध ही अविनाभाव संबंध है, अर्थात् अविनाभाव संबंध व्याप्ति संबंध का दूसरा नाम है उक्त परिभाषा में "ज्ञात अविनाभाव संबंध" पद का प्रयोग हुआ है। ज्ञात का तात्पर्य 'जाना हुआ है', अर्थात् वह व्यापक व्याप्ति संबंध जिसे पहले से ही जान लिया गया है। अतः व्याप्ति संबंध का पूर्व ज्ञान अनुमान के लिए आवश्यक है।

नांतरीयक अर्थ का तात्पर्य है वह वस्तु जो अविनाभाव संबंध से युक्त होता है, अर्थात् एक वस्तु के अभाव में दूसरी वस्तु का न होना नांतरीयक कहलाता है। इसलिए एक-दूसरे से सदैव युक्त रहने वाली वस्तु 'नांतरीयक अर्थ' कहलाती है। सूर्य और प्रकाश नांतरीयक अर्थ है। सूर्य के उदय होने पर धरती पर सभी जगह प्रकाश में अविनाभाव (व्याप्ति) संबंध है।

दो वस्तुओं में व्याप्ति संबंध का ज्ञान पहले से होने पर ही एक वस्तु के प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा दूसरी वस्तु का ज्ञान होता है। दोनों वस्तुएं नांतरीयक कहलाती है, क्योंकि एक के अभाव में दूसरी नहीं होती है। नांतरीयक विशेषण है और वस्तु या अर्थ विशेष्य है। इन दोनों पदों में विशेषणविशेष्य भाव होने से ~~नांतरीयक~~ नांतरीयक अर्थ कर्मधारय समास है। अतः दोनों का आधार या पक्ष एक ही होगा। सूर्य और सूर्य-प्रकाश का आधार सौर-मंडल है जिसके अन्तर्गत धरती भी है। मृत्यु और मनुष्य का आधार संसार, धुआं और आग का आधार पर्वत है। इस प्रकार नांतरीयक

Scanned with CamScanner

नांतरीयक अर्थ का तात्पर्य हेतु और साध्य से है। साध्य के अभाव में हेतु नहीं होता है। हेतु त्रिरूप होता है-

(क) पक्ष में हेतु का होना (पक्षसत्व)
(ख) सपक्ष में हेतु का निश्चित रूप में होना (सपक्षसत्व)
(ग) विपक्ष में हेतु का निश्चित रूप में नहीं होना (विपक्षासत्व)

व्याप्तिज्ञान के अंतर्गत हेतु और साध्य के अनिवार्य संबंध का ज्ञान होता है। साथ ही हेतु के त्रिरूप का भी ज्ञान होता है। हेतु की त्रिरूपता के ज्ञान के आधार पर ही साध्यरूपी नांतरीयक अर्थ का ज्ञान होता है। यह ज्ञान ही अनुमान है। दिङ्नाग ने साध्य के ज्ञान को अनुमिति नहीं कहा है बल्कि अनुमान ही कहा है। इसका तात्पर्य है कि दिङ्नाग के लिए अनुमान अनुमिति है। साधारणतः अनुमान और अनुमिति में अंतर माना जाता है। अनुमिति ज्ञान है, और उस ज्ञान का साधन अनुमान है।

Scanned with CamScanner